# हिंदी कहानी और उपन्यास: अनुशीलन
## (शिवानी की हिंदी कहानियों और उपन्यास में दिए गए योगदान के विशेष सन्दर्भ में)

**सुमन वर्मा**
**व्याख्याता,**
**हिंदी विभाग,**
**राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर**
**राजस्थान, भारत**

**Abstract**

गौरा पंत 'शिवानी' (17 अक्टूबर, 1923- 21 मार्च, 2003) हिन्दी की सुप्रसिद्ध एक ऐसी कथाकार और उपन्यासकार थीं जिनको हिंदी, संस्कृत, गुजराती, बंगाली, उर्दू तथा अंग्रेज़ी पर अच्छा ज्ञान था और जो अपनी कृतियों में उत्तर भारत के कुमायूँ क्षेत्र के आसपास की लोक संस्कृति की झलक दिखलाने और किरदारों के बेमिसाल चरित्र चित्रण करने के लिए जानी जाती हैं। उनकी कहानियों और उपन्यासों में उनके द्वारा रचित महिला पात्र केन्द्र में हैं जिनको ध्यान रखकर उनके व्यक्तित्व और संवेदनाओं को उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के कथानक में पर्याप्त स्थान दिया है।

उनकी रचनाएँ समकालीन यथार्थ का सफल चित्रण है जिसके अंतर्गत उन्होंने दहेज़ प्रथा, ससुरालीजनों द्वारा दहेज़ लालच से ग्रसित होकर महिलाओं के साथ किये जाने वाले अत्याचार, वैश्यावृत्ति, विभिन्न परिस्थितियों में महिलाओं के शारीरिक शोषण एवं अन्य समस्याओं का निरूपण किया है। उपन्यास, कहानी, व्यक्तिचित्र, बाल उपन्यास और संस्मरणों के अतिरिक्त, लखनऊ से निकलने वाले पत्र 'स्वतन्त्र भारत' के लिए 'शिवानी' ने वर्षों तक एक चर्चित स्तम्भ 'वातायन' भी लिखा। उनके लखनऊ स्थित आवास-66, गुलिस्ताँ कालोनी के द्वार, लेखकों, कलाकारों, साहित्य-प्रेमियों के साथ समाज के हर वर्ग जुड़े उनके पाठकों के लिए सदैव खुले रहे। शिवानी की 'आमादेर शांति निकेतन' और 'स्मृति कलश' इस पृष्ठभूमि पर लिखी गई श्रेष्ठ पुस्तकें हैं। 'कृष्णकली' उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। इसके दस से भी अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

प्रस्तुत अध्ययन हिंदी कहानी और उपन्यास पर केन्द्रित और शिवानी की हिंदी कहानियों और उपन्यासों पर विशेष रूप से संदर्भित गुणात्मक अध्ययन है जिसका निष्कर्ष उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में शिवानी की वैश्विक लोकप्रियता की पुष्टि करता है।

**मुख्य शब्दः** कहानी, उपन्यास, अनुशीलन, हिंदी, बौद्धिकता, व्यक्तित्व, कृतित्व, अनछुए, पहलू ।

**प्रस्तावना**

हिंदी साहित्य जगत में शिवानी का स्थान एक कहानीकार एवं उपन्यासकार के रूप में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ है जो उनके द्वारा हिंदी कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में दिए गए योगदान के कारण संभव हुआ। बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि वास्तविक नाम 'गौरा पंत' ने अपनी कहानियां और उपन्यास 'शिवानी' नाम से लिखे और इस प्रकार 'गौरा पंत' को कथा और उपन्यास जगत में शिवानी के नाम से पहचान प्राप्त हुई।

17 अक्टूबर, 1923 में राजकोट गुजरात में जन्मी शिवानी मूल रूप से उत्तर भारतीय थीं। शिवानी की कथा साहित्यकार और उपन्यास लेखिका के रूप में प्रसिद्धि वर्तमान में केवल गुजरात और उत्तर भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि आज वह विश्व के अधिकांश देशों में भी हिंदी-साहित्य प्रेमियों और पाठकों में भी बहुत प्रसिद्द और लोकप्रिय हैं। वैश्विक स्तर पर उनके कथा साहित्य और उपन्यास पर निरंतर किये जा रहे शोध-कार्य इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

शांतिनिकेतन में प्राप्त शिक्षा और वहां के साहित्यिक-सांस्कृतिक पर्यावरण का उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। शिवानी की अधिकांश कहानियां साठ और सत्तर के दशक में लिखी गयीं जो आज भी हिंदी पाठकों के बीच अत्याधिक लोकप्रिय हैं। शिवानी की शारीरिक और दैहिक मृत्यु वर्ष 2003 में हुई, परंतु उनकी रचनाओं ने उनको अमरता प्रदान कर दी है और वह अपनी कहानियों और उपन्यासों के रूप में हिंदी साहित्य और हिंदी पाठकों के हृदयों में सदैव जीवित रहेंगी।

हिंदी साहित्य जगत में शिवानी का अभूतपूर्व योगदान रहा। इसी का परिणाम है कि आज विश्व में न जाने कितने हिंदी शोधार्थी और विद्वान शोध के माध्यम से उनकी बौद्धिकता, व्यक्तित्व और कृतित्व के अनछुए पहलुओं को स्पर्श कर उनको संसार के सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं। मूल रूप से उत्तर भारतीय शिवानी को गुजराती के अलावा हिंदी, संस्कृत, गुजराती, बंगाली, उर्दू तथा अंग्रेजी का भी बहुत अच्छा ज्ञान था जिसने उनको न केवल शब्द-चयन, अपितु कथानक और चरित्र-संरचना में भी सहायता प्रदान की और उनको विभिन्न विषयों पर विभिन्न संस्कृतियों को उपयुक्त पात्रों की सहायता से पाठकों को परोसने और हिंदी साहित्य में कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने में सक्षम बनाया । शिवानी ने अपनी कृतियों में उत्तर भारत के कुमाऊं क्षेत्र के आसपास की लोक-संस्कृति की झलक प्रस्तुत की और पात्रों का अद्भुत चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया।

शिवानी की अद्भुत लेखन-अभिरुचि को उनके द्वारा जीवनपर्यन्त किये गए लेखनकार्य से अनुमान लगाया जा सकता है। 12 वर्ष की कम उम्र से कहानी लेखन से प्रारम्भ उनका लेखन कार्य उनके जीवन के अंतिम दिनों तक अविरल गति से चलता रहा। नारी-प्रधानता उनकी कहानियों और उपन्यासों की प्रमुख विशेषता थी जिसको उनके द्वारा नारी को विभिन्न परिस्थितियों के अंतर्गत केन्द्र में रखकर विभिन्न वैषयिक कथानकों की सफल प्रस्तुति दी।

कृष्णकली, भैरवी, आमादेर शांतिनिकेतन, विषकन्या, चौदह फेरे आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं जो अब हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर के रूप में विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और ग्रंथागारों में संरक्षित और सुरक्षित हैं। नायिका-सौंदर्य वर्णन और नायिका-चरित्र वर्णन शिवानी के नारीवादी होने का प्रमाण है और साथ ही यह इस तथ्य की पुष्टि भी करता है कि महिला होने के कारण प्रमुख रूप से उन्होंने महिलाओं की संवेदनाओं और मनः-स्थिति को उन्होंने अपनी महिला पात्रों की सहायता से अपनी कहानियों और उपन्यासों के कथानक में विशेष स्थान प्रदान किया।

शिवानी ने हिंदी साहित्य में कहानी को केन्द्रीय विधा के रूप में स्थापित किया तथा साथ ही, उन्होंने कहानी- क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रूचि को निर्मित और विकसित भी किया। इस योगदान के लिए हिंदी साहित्य शिवानी का सदैव ऋणी रहेगा। उनका कथा और उपन्यास लेखन पाठकों में जिज्ञासा उत्पन्न करने में समर्थ था। उनकी रचनाऐं यथार्थ-चित्रण और कल्पनाशीलता के मिश्रित प्रयोग और प्रस्तुतीकरण के लिए जानी जाती हैं।

उनकी कृतियां स्पष्ट करती हैं कि उन्होंने अपने समकालीन यथार्थ को बदलने की कोशिश नहीं की और उसको लगभग उसी रूप में प्रस्तुत किया जिस रूप में वह वास्तव में था अथवा जिस रूप में शिवानी ने उसको अपनी आँखों से देखा और अंतःप्रज्ञा से अनुभव किया। शिवानी की कृतियों में चरित्र चित्रण में एक तरह का आवेग दिखाई देता है। वह चरित्र को शब्दों में कुछ इस तरह पिरोकर पेश करती थीं जैसे पाठकों की आंखों के सामने राजा रवि वर्मा का कोई खूबसूरत चित्र तैर जाए। उन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिंदी का इस्तेमाल किया।

जब शिवानी का उपन्यास कृष्णकली धर्मयुग में प्रकाशित हो रहा था तो हर जगह इसकी चर्चा होती थी। उनके उपन्यास ऐसे हैं जिन्हें पढकर यह एहसास होता था कि वे खत्म ही न हों। उपन्यास का कोई भी अंश उसकी कहानी में पूरी तरह डुबो देता था। शिवानी भारतवर्ष के हिंदी साहित्य के इतिहास का बहुत प्यारा पृष्ठ थीं जिसके पढ़ने पर अधिक से अधिक जिज्ञासा, आनंद और संतुष्टि का अनुभव होता था। अपने समकालीन साहित्यकारों से भिन्न वह सहज और सादगीपूर्ण थीं। उनका लेखन कौशल उनके द्वारा लिखी गयी विभिन्न प्रकार की रचनाओं में स्पष्टतः प्रकट होता है। उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, आत्मकथा- शिवानी ने इन सभी को मौलिकता प्रदान कर हिंदी साहित्य में अपना स्थान बनाया।

**उपन्यास**

कृष्णकली, कालिंदी, अतिथि, पूतों वाली, चल खुसरों घर आपने, श्मशान चंपा, मायापुरी, कैंजा, गेंदा, भैरवी, स्वयंसिद्धा, विषकन्या, रति विलाप, आकाश आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं।

**कहानी संग्रह**

शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ, शिवानी की मशहूर कहानियाँ, झरोखा, मृण्माला की हँसी अपराधिनी, पुष्पहार, विषकन्या, लाल हवेली, रथ्या, स्वयं सिद्ध, रतिविलाप आदि शिवानी की प्रमुख और लोकप्रिय कहानियां और कहानी संग्रह हैं।

**संस्मरण**

अमादेर शांति निकेतन, समृति कलश, वातायन, जालक आदि उनकी अतीत की स्मृतियों से भरपूर संस्मरण हैं जो उनके अतीत में पाठकों को झाँकने और उसको समझने में सहायक हैं।

**यात्रा वृतांत**

चरैवैति, यात्रिक

**आत्मकथा**

सुनहुँ तात यह अमर कहानी

**उद्देश्य**

1. हिंदी साहित्य की विभिन्न गद्दीय उप-विधाओं में कहानी और उपन्यास विधा पर प्रकाश डालना।
2. स्वतांत्र्योत्तर काल में हिंदी उपन्यासों और कहानियों के लेखन में महिला लेखकों के योगदान को प्रस्तुत करना।
3. कथाकार और उपन्यासकार के रूप में शिवानी द्वारा हिंदी साहित्य जगत को दिए गए योगदान पर विस्तार से चर्चा करना
4. शिवानी की कहानियों और उपन्यासों में महिला-संवेदनाओं के उल्लेख पर प्रकाश डालना।

**प्राक्कल्पना**

1. कहानी और उपन्यास हिंदी गद्य साहित्य की उपविधायें हैं।
2. औद्योगिकीकरण एवं अन्य अनेकों सामाजिक प्रक्रिया कहानी और उपन्यास लेखन के प्रमुख प्रारंभिक कारण हैं।
3. हिंदी कहानी और उपन्यास लेखन में पुरुष और महिला लेखक- दोनों ने अपना योगदान दिया है।
4. हिंदी कहानी और उपन्यासों में महिला लेखकों ने महिलाओं को कथानक के केन्द्र में रखकर नारी संवेदनाओं को व्यक्त किया है।
5. हिंदी कहानी और उपन्यास साहित्य जगत में शिवानी एक अत्यंत लोकप्रिय नाम है।

**साहित्य पुनरावलोकन**

'आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में शिवानी सुविख्यात महिला लेखक हैं। हिंदी कथा सागर को समृद्ध बनाने में शिवानी का अभूतपूर्व योगदान रहा है। स्वतंत्रयोत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में उनके द्वारा दिया गया योगदान अतुलनीय है। साहित्य के प्रति निष्ठां, गहन अध्ययन, कई भारतीय और विदेशी भाषाओँ की ज्ञाता, देश-विदेश भ्रमण, शांतिनिकेतन में बिताये विद्यार्थी जीवन और रविंद्रनाथ टैगोर जैसे गुरुजनों की छत्रछाया ने शिवानी को अद्भुत साहित्य सृजन करने हेतु सकारात्मक दिशा प्रदान की'।[1]

'स्वतंत्रयोत्तर युग में औद्योगिकीकरण, यांत्रिकीकरण, राजनैतिक एवं सामाजिक उथल-पुथल और अस्तित्ववादी भौतिकोन्मुख चिंतन के कारण उत्पन्न स्थिति के फलस्वरूप नारी जागरण एवं स्त्री शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। परिणामस्वरूप उपन्यास ही नहीं, साहित्य के हर क्षेत्र में समृद्धि प्रदान करने वाली अमृता प्रीतम, शिवानी जी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियम्बदा जैसी महिला रचनाकारों की सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ। इन महिला रचनाकारों में शिवानी जी प्रमुख हैं'।[2]

'शिवानी आधुनिक अग्रगामी विचारों की समर्थक थीं। शिवानी का जन्म 17 अक्टूबर, 1923 को विजयादशमी के दिन गुजरात के पास राजकोट शहर में हुआ था। शिवानी के पिता श्री अश्विनीकुमार पाण्डे राजकोट में स्थित राजकुमार कॉलेज के प्रिंसिपल थे, जो कालांतर में माणबदर और रामपुर की रियासतों में दीवान भी रहे। शिवानी के माता और पिता दोनों ही विद्वान संगीत प्रेमी और कई भाषाओं के ज्ञाता थे। शिवानी ने पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन से बी.ए. किया। साहित्य और संगीत के प्रति एक गहरा रुझान 'शिवानी' को अपने माता और पिता से ही मिला। शिवानी के पितामह संस्कृत के प्रकांड विद्वान पंडित हरिराम पाण्डे, जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में धर्मोपदेशक थे, वह परम्परानिष्ठ और कट्टर सनातनी थे। महामना मदनमोहन मालवीय से उनकी गहरी मित्रता थी। वे प्रायः अल्मोड़ा तथा बनारस में रहते थे, अतः शिवानी का बचपन अपनी बड़ी बहन तथा भाई के साथ दादाजी की छत्रछाया में उक्त स्थानों पर बीता। शिवानी की किशोरावस्था शान्तिनिकेतन में और युवावस्था अपने शिक्षाविद पति के साथ उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में बीती। शिवानी के पति के असामयिक निधन के बाद वे लम्बे समय तक लखनऊ में रहीं और अन्तिम समय में दिल्ली में अपनी बेटियों तथा अमेरिका में बसे पुत्र के परिवार के साथ रहीं'।[3]

**शोधपद्धति**

1. शोध-पत्र लेखन हेतु निम्न शोध पद्धति अपनाई गई-
2. गुणात्मक शोध कार्य करना
3. अध्ययन-विषय और शोध-उद्देश्यों का निर्धारण करना
4. गुणात्मक शोध प्ररचना एवं प्राक्कल्पना का निर्माण करना
5. विभिन्न इंटरनेट साइट्स, पुस्तकों आदि में विषय-सम्बन्धी साहित्य संकलित करना एवं उस में से विशेषरूप से उपयुक्त साहित्य का गहन अध्ययन कर उसका प्रयोग शोधपत्र में संदर्भित करना।
6. उद्देश्यों और प्राक्कल्पना को दृष्टिगत करते हुए अंत में निष्कर्ष ज्ञात करना।

**निष्कर्ष**

गुजरात के राजकोट शहर में जन्मी लेखिका 'शिवानी' नाम से जानी जाने वाली इन उपन्यासकार का असली नाम गौरा पंत 'शिवानी' था। इन्हें लोक संस्कृति की झलक दिखलाने और

अपने उपन्यासों के पात्रों का अतुलनीय चरित्र चित्रण करने के लिए जाना जाता है जो इनके उपन्यासों और कहानियों की मुख्य विशेषता है। इनकी कहानियों एवं उपन्यासों के केन्द्र में महिला पात्र हैं। उनकी रचनाओं में प्रधान नायिका की सीरत और सूरत का अद्भुत वर्णन प्राप्त होता है।

उनके लेखन के प्रारंभिक चरण में उनकी बांग्ला भाषा में लिखित रचनायें हैं, परन्तु शनैः-शनैः हिंदी, संस्कृत, गुजराती, उर्दू और इंग्लिश भाषाओं में भी ये पारंगत रूप से लिखने लगीं, और इस प्रकार कालांतर में हिंदी कथाकार एवं उपन्यासकार के रूप में स्थापित होगईं। मात्र 12 वर्ष की आयु में अल्मोड़ा से प्रकाशित 'नटखट' नामक एक बाल पत्रिका में उनकी पहली रचना प्रकाशित हुई। उनका रचनात्मक सफर जीवनभर चलता रहा और वे हिंदी के अलावा अन्य भाषाओँ में भी रचनाएँ लिखती रहीं। आधुनिक सोच के साथ आगे बढ़ने वाली शिवानी ने पश्चिम बंगाल के शांति निकेतन से बी. ए. किया। शिवानी अपने माता-पिता के व्यक्तित्व से प्रभावित थीं। संगीत तथा साहित्य प्रेमी माता-पिता के प्रभाव से उनका रुझान हिंदी साहित्य में हुआ।

1951 में शिवानी जी की एक लघु रचना 'मैं मुर्गा हूँ' 'धर्मयुग' पत्रिका में छपी थी। इसके पश्चात, उनकी कहानी 'लाल हवेली' से जिस लेखन-क्रम की शुरुआत हुई, वह अनवरत रूप से उनके जीवन के अन्तिम दिनों तक चलता रहा। उनकी अन्तिम दो रचनाएँ 'सुनहुँ तात यह अकथ कहानी' तथा 'सोने दे' आत्म अभिव्यक्ति है। शिवानी ने उपन्यास, कहानी, व्यक्तिचित्र, बाल उपन्यास और संस्मरणों के अतिरिक्त, लखनऊ से निकलने वाले पत्र 'स्वतन्त्र भारत' में एक चर्चित स्तम्भ 'वातायन' भी लिखा।

उनके लखनऊ स्थित आवास-66, गुलिस्ताँ कालोनी के द्वार, सभी लेखकों, नवोदित कलाकारों, साहित्य-प्रेमियों के साथ समाज के हर वर्ग से जुड़े उनके पाठकों के लिए सदैव खुले रहे। शिवानी की 'आमादेर शांति निकेतन' और 'स्मृति कलश' इस पृष्ठभूमि पर लिखी गई श्रेष्ठ पुस्तकें हैं। 'कृष्णकली' जिसके दस से भी अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें उनकी भाषा-शैली की विशेष रूप से सराहना की गयी क्योंकि इसके कथानक का प्रत्येक अंश कहानी में पुररूपेण अन्तर्निहित करने में सक्षम था।

उपन्यास, कहानी, व्यक्तिचित्र, बाल उपन्यास और संस्मरणों के अतिरिक्त, लखनऊ से निकलने वाले पत्र 'स्वतन्त्र भारत' के लिए 'शिवानी' ने वर्षों तक एक चर्चित स्तम्भ 'वातायन' भी लिखा। हिंदी साहित्य में अपने अतुलनीय योगदान के बावजूद, शिवानी सादगी प्रिय थीं। उनके हिंदी साहित्य को दिए योगदान के कारण 1982 में उनको भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया। वर्ष 2003 में हिंदी उपन्यास और कहानी लेखन का यह सितारा हमेशा के लिए डूब गया, परंतु कहानियों और उपन्यासों के रूप में वह हमेशा हिंदी साहित्य प्रेमियों के हृदय में जीवित रहेंगी।

'कहानी के क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रुचि निर्मित करने तथा कहानी को केंद्रीय विधा के रूप में विकसित करने का श्रेय शिवानी को जाता है। वह इस तरह लिखती थीं कि लोगों की उसे पढ़ने को लेकर जिज्ञासा पैदा होती थी। उनकी भाषा शैली महादेवी वर्मा जैसी रही, पर उनके लेखन में एक लोकप्रिय किस्म का मसविदा था। उनकी कृतियों से यह झलकता है कि उन्होंने अपने समय के यथार्थ को बदलने की कोशिश नहीं की। ममता कालिया कहती हैं, शिवानी की कृतियों में चरित्र चित्रण में एक तरह का आवेग दिखाई देता है। वह चरित्र को शब्दों में कुछ इस तरह पिरोकर पेश करती थीं जैसे पाठकों की आंखों के सामने राजा रवि वर्मा का कोई ख़ूबसूरत चित्र तैर जाए। उन्होंने संस्कृत निष्ठ हिंदी का इस्तेमाल किया पर कहानी की विधा में ही रहने के चलते वह हिंदी के विचार जगत में एक नया पथ प्रदर्शन नहीं कर पाई।

शिवानी की क़रीबी रहीं वरिष्ठ साहित्यकार पद्मा सचदेव के अनुसार जब शिवानी का उपन्यास 'कृष्णकली' धर्मयुग में प्रकाशित हो रहा था तो हर जगह इसकी चर्चा होती थी। मैंने उनके जैसी भाषा शैली और किसी की लेखनी में नहीं देखी। उनके उपन्यास ऐसे हैं जिन्हें पढकर यह एहसास होता था कि वे खत्म ही न हों। उपन्यास का कोई भी अंश उसकी कहानी में पूरी तरह डुबो देता था। उन्होंने कहा, शिवानी भारतवर्ष के हिंदी साहित्य के इतिहास का बहुत प्यारा पन्ना थीं। अपने समकालीन साहित्यकारों की तुलना में वह काफ़ी सहज और सादगी से भरी थीं। उनका साहित्य के क्षेत्र में योगदान बड़ा है पर फिर भी हिंदी जगत ने उन्हें पूरा सम्मान नहीं दिया जिसकी वह हकदार रहीं। शिवानी के आखिरी दिनों में भी उनके संपर्क में रहीं पद्मा सचदेव ने कहा कि उन्हें गायन का काफ़ी शौक़ था। उन्हें आखिर तक कुमाऊं से बेहद प्यार रहा। उन्हें वहीं के नज़ारे याद आते थे'।[5]

**संदर्भ सूची**


1. *डॉ. अनिल पी. गामीत, 'उपन्यासकार शिवानी: एक आलोचनात्मक अनुशीलन' खंड-2, RET International Academic Publishing, 2015*
2. *अंसारी, नज़मा एम., 'उपन्यासकार शिवानी: संवेदना और शिल्प' पीएच. डी. थीसिस, हिंदी विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, 2010*
3. *कस्तूरी मृग- पीएच. डी. भारतीय साहित्य संग्रह, 4 अप्रैल, 2011*
4. *शिवानी परिचय (हिंदी) गद्यकोश, 20 मार्च, 2013*